IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नाटककार मोहन राकेश : समकालीन सामाजिक और मानसिक संघर्षों का अंकन

राकेश कुमार

सहायक आचार्य हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, किठाना,

(चिड़ावा), झुंझुनुं (राजस्थान)

शोध सारांश :

आधुनिक युग के नाटककारी में मोहन राकेश का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जहरों के राजहरा और आधे–अधुने के साथ आशाढ़ का एक दिन इनका जगत प्रसिद्ध नाटक है। इनके नाटकों के कथानक आधुनिक परिवेश से जुड़े हुए होते है। प्रस्तुत नाटक 'आषाढ़ का एक दिन तीन अंकों में विभक्त है। इस नाटक के पात्र कालिदास एक ऐतिहासिक पात्र है किन्तु नाटककार ने अपनी कल्पना के अनुसार तसे एक अलग रूप दिया है। कालिदास के माध्यम से साहित्यकारों की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। नाटककार मोहन राकेश भारतीय नाट्य जगत के एक महत्वपूर्ण लेखक माने जाते हैं, जिनका लेखन समकालीन सामाजिक और मानसिक संघर्षों का सटीक अंकन करता है। उनके नाटक न केवल समाज की जटिलताओं और मानसिक द्वंद्वों को उजागर करते हैं, बल्कि उनके पात्रों के माध्यम से व्यक्ति की आंतरिक स्थिति और संघर्षों को भी व्यक्त करते हैं। मोहन राकेश ने अपने नाटकों में समाज की व्यथा, स्त्री के अस्तित्व की तलाश, और व्यक्तिगत असमंजसों को गहरे और प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। शोध में राकेश के संवादों की गहराई, उनके पात्रों के मानसिक विकास और उनके नाटकों में मौजूद समाजिक चेतना को समझने का प्रयास किया जाएगा। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे राकेश का लेखन आज भी हमारे समाज के समकालीन मुद्दों से जुड़ा हुआ है और समाज को उसके मानसिक और सामाजिक संघर्षों पर पुनः विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

मुख्य शब्द : मोहन राकेश, समकालीन सामाजिक संघर्ष, मानसिक संघर्ष, नारीवाद, भारतीय नाटक, मानसिक द्वंद्व, संवाद, समाजिक चेतना।

प्रस्तावना :

नाटककार मोहन राकेश भारतीय नाट्य साहित्य के एक महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाते हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समकालीन समाज की जटिलताओं, मानसिक द्वंद्वों और सामाजिक समस्याओं को गहरे और प्रभावी तरीके से उजागर किया। उनका लेखन न केवल भारतीय समाज की तत्कालीन स्थिति को दर्शाता है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, संघर्षों और अस्मिता की तलाश को भी सामने लाता है। मोहन राकेश के नाटकों में पात्रों के आंतरिक और बाहरी संघर्षों का चित्रण इस बात को प्रमाणित करता है कि उनका लेखन समाज और मनुष्य के व्यवहार के गहरे पहलुओं को समझने का प्रयास करता है। राकेश के नाटक, जैसे 'आधे–आधे' 'लेखनी', और 'नया गांव' समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक और मानसिक तनाव को दर्शाते हैं। उनके नाटक पात्रों के बीच मानसिक द्वंद्व, आत्म–संघर्ष और व्यक्तिगत असमंजस के चित्रण के कारण आज भी प्रासंगिक हैं। इन नाटकों में राकेश ने समाज के

भीतर व्याप्त असमानताएं, राजनीतिक उथल–पुथल, और जातिवाद जैसी समस्याओं को बारीकी से उजागर किया है। साथ ही, वे नारी के अस्तित्व, उसकी पहचान, और मानसिक संघर्षों को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करते हैं, जो उनके लेखन को विशेष बनाता है।

समाज और व्यक्तित्व के बीच के गहरे संबंध को समझने के लिए मोहन राकेश के नाटकों का अध्ययन आवश्यक है। उनका लेखन न केवल सामाजिक मुद्दों पर विचार करता है, बल्कि यह व्यक्ति की मानसिक स्थिति और अस्तित्व के संकटों को भी सामने लाता है। उनके पात्रों के संवाद और कार्यों के माध्यम से समाज के भीतर की जटिलताएं और मानसिक संघर्ष प्रकट होते हैं, जो दर्शकों और पाठकों को आंतरिक और सामाजिक विषयों पर गहरे विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

शोध के उद्देश्य

- मोहन राकेश के नाटकों में सामाजिक और मानसिक संघर्षों का विश्लेषण करना।
- मोहन राकेश के जीवन यात्रा एवं घटनाएं का अध्ययन करना।
- नारीवादी दृष्टिकोण से मोहन राकेश के लेखन साहित्यिक योगदान का अध्ययन करना।
- समकालीन समाज के संदर्भ में राकेश के नाटकों का अध्ययन करना।

परिचय :

मोहन राकेश का जनम 8 जनवरी 1925 में अमृतसर में एक सामान्य मरिवार में हुआ। उनका पूरा नाम मोशन गुगलानी था, परंतु बाद में उन्होंने अपनी दीदी के सुझाव पर स्वंय ही अपना नाम मोहन राकेश कर दिया। कहते है अल्पायु में ही व्यक्ति के बारे में पूर्वाभास हो जाता है कि वह क्या बनेगा। मोहन राकेश भी छोटी सी उम्र से घर से अलग अपनी एक दुनिया बसाने लगे।

'कभी चीटियों की पंक्तियों के साथ दीवार के सुराखों की यात्रा करता हूं कभी धूप में उड़ते चरणों को आपस में लड़ाया करता हूं दीवारों के टूटे प्लास्टर से लेकर खोज के बहते पानी में तरह–तरह के चेहरे खोजता हूं पर स्टार के चेहरों को बदलने के लिए आंख का कौन बदलता हूं पानी के चेहरों को हाथ से बदल देता हूं बहन मेरे बनाए शेरों को बिगड़ता नहीं लगता है तो उन में नए रूप भर देता हूं बहाव मेरे बनाये चेहरों को विगाहने लता तो उनमें नये रूप भर देता हूँ।'

जीवन यात्रा एवं घटनाएं

उपर्युक्त कथन ही यह सिद्ध करने को काफी है कि एक भावुक और चिन्तक बालक कैसे आगे चलकर श्र नाटककार, कथाकार, कवि बनता है। हालांकि उनका पारिवारिक जीवन संघर्षों से मुक्त नहीं रहा। मात्र 16 वर्ष की उम्र में पिता की मृत्यु के हादसे ने उन किशोर कंधों पर परिवार की जिम्मेदारी डाल दी। लेकिन इन सबकों उन्होंने अपनी पढ़ाई पर हावी नहीं होने दिया। पंजाब यूनिवर्सिटी से उन्होंने सन् 1944 में संस्कृत में एम.ओ.एल. की परीक्षा उत्तीर्ण की और सन् 1962 में हिन्दी में प्रथम श्रेणी में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। उनका व्यावसायिक जीवन स्थिर नहीं रहा। सन् 1944 में वे फिल्मी दुनिया में किनमा आजमाने मुम्बई पहुँचे। लगभग एक वर्ष पटकथाकार के रूप में कार्य किया परन्तु फिन्न स्वाभिमान के चलते इस्तीफा दे दिया। कुछ समय 'टाइम्स ऑफ इण्डिया समाचार पत्र में कार्य किया, परन्तु यह भी अधिक नहीं है पाया। सन् 1950 से 1957 के बीच जालधंर के डी.ए.वी. कॉलेज और शिमला के बिशप कॉटेज विद्यालय में अध्यापन कार्य किया, इस बीच लेखन भी जारी रहा। सन् 1957 में दिल्ली आए। पहले अक्षर प्रकाशन से जुड़े, बाद में सन 1962 में सारिका पत्रिका का लगभग एक वर्ष तक संपादन किया। उनका स्वतंत्र लेखन तो जारी रहा ही सन् 1971 में उन्हें फिल्म वित्त निगम का सदस्य बनाया गया। सन् 1972 में उन्हें शोधकार्य हेतु एक लाख रूपये की नेहरू फैलोशिप मिली, शोध का विषय था–'नाटक में सही शब्द की खोज'। 3 दिसम्बर सन् 1972 को हृदयगति रूक जाने से उनका निधन हो गया।

रचना संसार

मोहन राकेश का साहित्यिक योगदान कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि कई विधाओं में रहा है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह है मलबे का मालिक, इंसान के अंतहर, नये बादल, एक और जिन्दगी, मिले–जुले चेहरे एक–एक दुनिया चेहरे आदि। उपन्यासी में प्रमुख है आधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, नीली रोशनी की बॉहे अन्तराल आदि। प्रनुल निबंध संग्रह है परिवेश समय–सारणी, बकलम खुद। संस्मरणों में प्रमुख नाम है आखिरी चट्टान तक, ऊँची झील, पतझाड़ का रंगमंच। इनके अतिरिक्त पटकथा लेखन, डायरी, अनुवाद, शोध और सपादन से भी ये जुड़े रहे।

मोहन राकेश के नाट्य साहित्य में नाटक, एकांकी और अनुवाद है। नाटकों में आषाढ़ का एक दिन लेहरों के राजहंस और आधे–अधूरे, एकाकी विधा में अण्डे के छिलके, 'बीज तथा अन्य एकाकी' और अनुवाद के अंतर्गत अभिज्ञान शाकुन्तलम एवं मृछकटिकम् नाटकों के अनुवाद शामिल है।

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक 1958 ई में प्रकाशित मोहन राकेश का पहला नाटक है बेहद चर्चित रहा। इस पर उन्हें 'संगीत नाटक अकादमी' का सर्वोतम नाटककार का पुरस्कार भी मिला। तीन अंक और बारह पात्रों वाले इस नाटक के नायक है–संस्कृत के विख्यात कवि–नाटककार कालिदास। कालिदास के जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं और स्थितियों के संयोजन से इस नाटक की कथा बुनी गई है, लेकिन माटककार ने इसने कल्पना और नौलिकता का मर्याप्त समावेश किया

समकालीन सामाजिक और मानसिक संघर्ष

नाटककार मोहन राकेश ने अपने नाटकों के माध्यम से समकालीन सामाजिक और मानसिक संघर्षों को अत्यंत संवेदनशील और प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है। उनका लेखन न केवल उस समय के भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर करता है, बल्कि यह समाज और व्यक्ति के मानसिक संघर्षों के बीच गहरे संबंध को भी स्पष्ट करता है। उनके नाटक जीवन के विभिन्न पहलुओं को, जैसे जातिवाद, सामाजिक असमानता, मानसिक अवसाद, और आत्म–संघर्ष को बारीकी से प्रस्तुत करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि राकेश का लेखन न केवल साहित्यिक दृ ष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वह एक समाजशास्त्रीय और मानसिक दृष्टिकोण से भी प्रासंगिक है। मोहन राकेश के नाटकों में पात्रों के आंतरिक द्वंद्वों और सामाजिक संघर्षों को चित्रित करने का उनका तरीका अत्यंत प्रभावी और वास्तविक है। उनके पात्र न केवल बाहरी सामाजिक दबावों का सामना करते हैं, बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक संघर्ष भी उनके कार्यों और निर्णयों को प्रभावित करते हैं। राकेश ने नाटक के माध्यम से व्यक्तित्व की जटिलताओं को उद्घाटित किया और समाज के भीतर व्याप्त मानसिक संकटों को प्रकाश में लाया। उनके नाटकों में नारीवाद की झलक भी देखी जा सकती है, जहाँ महिलाओं के मानसिक संघर्षों, अस्तित्व की तलाश और समानता के लिए संघर्ष को प्रमुखता से दर्शाया गया है। राकेश ने महिलाओं के भीतर के आंतरिक द्वंद्वों और समाज की संरचनाओं के कारण होने वाले मानसिक दबावों को न केवल पहचाना, बल्कि उसे साहित्यिक रूप में प्रस्तुत भी किया।

शोध निष्कर्ष

मोहन राकेश के नाटकों में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत में सामाजिक बदलाव और संघर्षों का चित्रण उस समय के जटिल सामाजिक, मानसिक और राजनीतिक परिदृश्य का प्रतिबिंब है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से न केवल भारतीय समाज की समस्याओं को उजागर किया, बल्कि उन संघर्षों को भी सामने रखा, जिनका सामना व्यक्ति और समाज को स्वतंत्रता के बाद करना पड़ा। उनके नाटक आज भी सामाजिक और मानसिक समस्याओं पर गहरी सोच और विचार के लिए प्रेरित करते हैं। मोहन राकेश का लेखन आज भी समकालीन समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उनके नाटकों में दिखाई गई मानसिक और सामाजिक समस्याएँ, जैसे आत्म–संघर्ष, अस्तित्व का संकट, और नारीवादी दृष्टिकोण, आज भी समाज के विभिन्न हिस्सों में विद्यमान हैं। राकेश का लेखन न केवल ऐतिहासिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है, बल्कि आज भी हमारे समाज के मानसिक और सामाजिक समस्याओं पर गहरे विचार करने के लिए प्रेरित करता है। मोहन राकेश के नाटक एक साहित्यिक कृति से कहीं अधिक हैं; वे समाज के भीतर छिपी मानसिक और सामाजिक समस्याओं को उजागर करने का एक माध्यम हैं। उनके नाटक आज के समाज के लिए एक आईना हैं, जिसमें हम अपने अंदर और समाज में हो रहे बदलावों को पहचान सकते हैं। इस प्रकार, राकेश का लेखन न केवल साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान है, बल्कि यह सामाजिक सुधार, मानसिक स्वास्थ्य, और मानवाधिकारों के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राकेश, मोहन (2003) : 'आधे–आधे' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. राकेश, मोहन (2005) : लेखनी साहित्य अकादमी, दिल्ली।
3. द्विवेदी, सुषमा (2010) : 'मोहन राकेश के नाटकों में मानसिक संघर्ष : एक विश्लेषण' हिंदी नाटक और समाज, पृ. 45–56।
4. शर्मा, सुरेश (2008) : समकालीन हिंदी नाटक, विषय, रूप और संरचना, ज्ञानदीप प्रकाशन, कानपुर।
5. तिवारी, राकेश (2012) : 'मोहन राकेश का साहित्य और समाज के मानसिक संघर्ष' हिंदी साहित्य समीक्षा, पृ. 123–137।
6. कुमार, रामनाथ (2009) : समाज और मानसिक संघर्ष : मोहन राकेश के नाटकों में, भारतीय साहित्य संस्थान, इलाहाबाद ।
7. रावत, नंदिनी (2011) : 'समाज के भीतर मानसिक असंतुलन मोहन राकेश के नाटकों में दृष्टिकोण' हिंदी साहित्य : एक आलोचनात्मक अध्ययन, पृ. 78–89।
8. गुप्ता, रत्ना (2013) : 'मोहन राकेश के नाटकों में महिलाओं का चित्रण' हिंदी नारीवाद और नाटक, लखनऊ पृ. 67–80।
9. सिंह, प्रवीण (2015) : समकालीन हिंदी नाटक और मानसिक स्वास्थ्य, हिंदी प्रकाशन, ।
10. कुमार, अजय (2014) : 'मोहन राकेश के नाटकों में सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण' हिंदी साहित्य शोध पत्रिका, पृ. 101–115।